यम

भाग - १

प्रकाश की **अनुपस्थिति** को अन्धकार कहा जाता है। **'अन्धकार'** का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। जब प्रकाश का उजाला होता है, तब अन्धकार **अपने आप अलोप हो जाता है।**

ईश्वर **'प्रकाश रूप'** है तथा **'प्रेम स्वरूप'** है। जहां ईश्वर का प्रकाश है, वहां ईश्वर की **'उपस्थिति'** है तथा ईश्वर का 'तत्व – ज्ञान रूपी' **'प्रकाश'** है। यह **'आत्म मंडल'** (Divine Realm) का **'खेल'** है, जहां **ईश्वरीय 'हुकुम' प्रवृत है।**

जब **'जीव'** अज्ञानता के अन्धकार में, **अपनी विरासत – 'आत्मिक प्रकाश' से 'दूर' हो जाता है या उसको 'भूल' जाता है,** तब त्रिगुणी मायिकी मंडल के अज्ञानता रूपी अन्धकार के **भ्रम – भुलाव की सीमा में विचरण करता है।** ईश्वरीय 'हुकुम' के प्रवाह से **'बेसुर' होकर पाँच** वाशनाओं **की प्रेरणा अधीन अपनी 'मनमर्जी' करता** है तथा 'हुकुम' अथवा **ईश्वरीय रज़ा' से बाहर होकर अनुचित कर्म करता है।**

गुरबाणी में, जीव को हुकुम का **उल्लंघन करने** तथा अपनी **मनमर्जी करने से 'रोकने' के लिए बहुत सख्त 'ताड़ना'** की गयी है। यदि हम **ढीठ होकर,** फिर भी **मनमर्जी से अनुचित कर्म करते हैं,** तब उसके दण्ड भुगतान के लिए **'यम'** बनाये गये हैं। यह सब **त्रिगुण मायिकी मंडल का 'खेल' है।**

इस त्रिगुण मायिकी मंडल में अनन्त आकाश गंगा (galaxies)अथवा तारों के समूह हैं।

प्रत्येक तारे के कई **ग्रह** (Planets) हैं ।

इन ग्रहों में से **पृथ्वी** (earth) भी एक ग्रह है।

इस दुनिया में कई **देश** हैं।

प्रत्येक देश की अपनी – अपनी **सरकार** (government) होती है।

प्रत्येक सरकार का **संविधान** (Constitution) होता है।

संविधान अनुसार **कानून** (law) बनाये जाते हैं।

कानून को प्रचलित करने के लिए **शासकीय प्रबन्ध** (government machinery) होता है।

कानून का उल्लघंन रोकने के लिए **पुलिस** (police) होती है ।

उल्लघन करने पर दण्ड के लिए **अदालत** (court) बनी है।

'अदालत' में मुकदमें की पैरवी के लिए –

मिसल (केस फाइल)
दावेदार
अपराधी
गवाह
वकील

पेश किये जाते हैं।

'जज' मुकदमें की सुनवाई करके कानून अनुसार **सजा सुनाता है।** दण्ड भुगतान के लिए जेल बने हैं, जहां जेल के अधिकारी (Jail Staff) अपराधी को सजा भुगताते हैं।

यह सारा सांसारिक सिलसिला, **दृश्यमपन मंडल का खेल है।** इसमें –

हेर – फेर हो सकता है
पुलिस से बच सकते हैं
सिफारिश चल सकती है
रिश्वत चल सकती है
वकीलों की दिमागी हेरा – फेरी हो सकती है
गवाही झूठी हो सकती है
फैसले में भूल या गलती हो सकती है।

माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै
हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ।। (पृ. ५९१)

इस दृश्यमान सांसारिक कानून के सिलसिले के अतिरिक्त, **अदृश्य मंडल में गुप्त कानूनी सिलसिला अथवा इलाही हुकुम चल रहा है,** जो सांसारिक सिलसिले से **विलक्षण तथा भिन्न है।**

सांसारिक सिलसिले में भिन्न – भिन्न देशों के भिन्न – भिन्न कानून होते हैं तथा उन कानूनों की **अनेक 'धाराऐं'** होती है, परन्तु इलाही हुकुम का **मात्र एक ही कानून है तथा एक ही 'धारा' है।**

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ।। (पृ. १३४)

अहि करु करे सु अहि करु पाए
कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ।। (पृ. ४०६)

जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ।। (पृ. ४३३)

सांसारिक कानून तो सदा **परिवर्तनशील हैं** या इनमें **संशोधन** (amendments) होते रहते हैं। परन्तु **'इलाही हुकुम'** तो अपार, सच्चा, **त्रुटि रहित तथा अटल होने के कारण,** इसमें **संशोधन की आवश्यकता ही नहीं।** यह इलाही **'हुकुम'** युग – युगान्तरों से सदैव इकसार प्रवृत्त रहा है तथा प्रवृत्त रहेगा।

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।। (पृ. १)

तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ।।
जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ।। (पृ ३९६)

इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ।। (पृ. ४२५)

The *Divine "Law of Karma"* is all-seeing, all engulfing, Eternal, un-failing, fundamental, which is so complete and perfect, that it never needs any change or amendment.

यह **'हुकुम'** इलाही मंडल का **गुप्त तथा अलिखित कानून** (secret and un-written law) है। जो आम जनता की समझ – बूझ से बाहर है। इसलिए हम

इस **इलाही कानून का उल्लघंन सहज–स्वभाव तथा अनजाने ही करते रहते हैं ।**

हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ।। (पृ १२८०)

गुरूजनों, भक्तों, गुरमुखों तथा संतो ने इस **इलाही 'हुकुम'** को अपने जीवन तथा बाणी द्वारा हमें समझाने का यत्न किया है। परन्तु फिर हम इन गुप्त इलाही 'भेदों' को दिमागी तौर पर, अधूरे मन से ही पढ़ते–सुनते–समझते हैं तथा शीघ्र ही भूल जाते हैं।

वास्तव में हम दृश्यमान दुनिया में इतने गलतान तथा मस्त हैं कि इलाही गुप्त 'हुकुम' को समझने तथा बूझने की **आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती, उसका पालन तो क्या करना था ।**

जब हम दुनिया के कानून का जानबूझ कर उल्लघंन कर सकते हैं तब गुप्त **इलाही हुकुम का उल्लघंन तो अनजाने तथा 'अवश्य' ही हो जाता है।**

इसी कारण गुरबाणी में दर्शाया गया है –

सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ।। (पृ. ८५१)

इस गुप्त इलाही हुकुम की रक्षा भी गुप्त विधि से ही होती है तथा इसका उल्लघंन करने वालों को अदृश्य रूप में सजा दी जाती है।

इस इलाही 'कानून' की गुप्त शक्ति, अपने आप कार्यरत होती है तथा दोषी को, 'जो मै कीआ सो मै पाइआ' के नियम अनुसार सजा भोगनी पडती है।

इस गुप्त **इलाही 'अदालत'** में किसी पुलिस, गवाह, केस–फाइल, वकील तथा 'जॅज' आदि की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि यह सारी पैरवी तथा कानूनी कार्यवाही, अदृश्य दुनिया (Ethereal World) में सहज–स्वभाव, अपने–आप, गुप्त रूप में (secretly and spontaneously) हो रही है। खुबी यह है कि इस सारे इलाही कानूनी सिलसिले में, किसी भूल या गलती की **गुंजाइश ही नहीं** क्योंकि इस गुप्त इलाही अदालत में एक मात्र सच्चा **'धर्म–न्याय' ही प्रवृत्त है।**

सांसारिक कानून तो सरकारी **किताबों में** लिखे होते हैं तथा उनकी सूक्ष्म भावनाएं ही हमारे दिमाग मे बसी होती हैं, जिनके उल्लंघन से बचने का हम ध्यान रखते हैं।

परन्तु, इलाही हुकुम के कानून **किताबों में नहीं लिखे जाते ।** यह तो हमारी **अन्तर आत्मा में,** हमारे **'साथ' ही लिखे हुए** हैं तथा परिपूर्ण हैं।

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ।।१।।
हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ।।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ।।
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ।।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ।।
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।। (पृ. १)

हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ।। (पृ१२८०)

जिस प्रकार सांसारिक कानून मानने वाले नागरिक (Law abiding citizens) **पुलिस की पकड़ से बचे रहते हैं, इसी प्रकार जब तक हम अपनी अन्तर – आत्मा में लिखे हुए हुकुम या 'ज़मीर' की आवाज को सुनते तथा मानते रहगें, तब तक हम 'यम – रूपी' – 'अदृष्ट पुलिस' से बचे रहेंगे। परन्तु ज़मीर की अन्तर आत्मिक ताड़ना पर हम गौर ही नहीं करते या उसकी उपेक्षा** (ignore) **कर देते हैं।**

So Long as we hear and obey the silent whisper of our Inner Soul, we will be out of reach of the clutches of the 'Karmic Law'. This silent whisper, called conscience, warns us, within ourselves, against any digression of Divine Law, but we have become so obdurate that we fail to hear, catch or care for this sublime esoteric warning. Thus we sow the seeds of our sins, and reap the consequences of our deprayed karmas. In fact our 'conscience' is the esoteric "Police' to deter us from doing wrong deeds against the 'divine law of Karma' but we ignore it to our detriment.

सांसारिक कानून तो हम पर तब तक लागू होते हैं, जब तक हम जीवित हैं, परन्तु अदृष्ट कानून (esoteric karmic law) **तो मृत्यु उपरान्त भी, हमारी 'आत्मा' अथवा जीव पर लागू रहता है।** यदि अपनी चतुराई, सिफारिश या रिश्वत द्वारा सांसारिक कानून से बच भी जायें, तो भी मृत्यु उपरान्त 'जीव' को अपने कर्मो या पापों की सजा अवश्य भोगनी पड़ती है।

गुरबाणी में, इस विषय में हमें यूं ताड़ना की गयी है –

मन मेरे भूले कपटु न कीजै ।।
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ।। (पृ. ६५६)

जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ।।
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ।।
छडि खड़ोते रिवनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ।।
हथ मरोडै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ।।
जेहा बीजै सा लुणै करमा संदड़ा खेतु ।। (पृ. १३४)

मोहु कूडु कुटंब है मनमुखु मुगधु रता ।।
हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता।।
सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ।।
फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता।। (पृ ७८७)

अमलु सिरानो लेखवा देना ।।
आए कठिन दूत जम लेना ।।
किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ।।
चलहु सिताब दीबानि बुलाइआा ।।
चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ।।
हरि फुरमानु दरगह का आइआ ।। (पृ. ७९२)

मन कहा बिसारिओ राम नामु ।।
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ।। (पृ. ११८६)

इस विषय के **सूक्ष्म पक्ष** को समझने के लिए और स्पष्ट किया जाता है –

हम जो भी कर्म करते हैं, उसका वास्तविक **'कर्म – कर्त्ता'** हमारा शरीर नहीं है। हमारे शरीर के अन्दर **हमारा 'मन'** वास्तविक कर्म – कर्त्ता है।

मन में किसी बाहरी 'संगत' या कुसंगत **के कारण** या उक्साहट द्वारा 'ख्याल' या 'संकल्प' उत्पन्न होते हैं।

इन ख्यालों पर हमारे अन्तःकरण (sub-conscious mind) की 'रंगत' भी चढ़ी होती है। इस रंगत पर पांच विकारों का अक्स (reflection) पड़ता है।

हमारी बुद्धि, ख्यालों की छान – बीन करके, इन्हें 'रूप – रेखा' देती है।

इस प्रकार हमारे ख्याल हमारे शरीर द्वारा प्रकट होते हैं, जिन्हें 'कर्म' कहा जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारा 'शरीर' केवल मन का हथियार (instrument) ही है, जिसे हमारा 'मन' अपने ख्यालों की आशाओं की पूर्ति के लिए प्रयोग करता है।

हमारे कर्मों का 'अच्छा' या 'बुरा' होना, निम्नलिखित कारणों पर निर्भर है –

१. बाहर की उक्साहट (exciting cause)
२. पांच विकारों का प्रभाव
३. विचारों की 'रंगत'
४. अन्तःकरण की 'आवाज' (whisper of conscience)
५. मन की वासना
६. बुद्धि की विचार – शक्ति

इस प्रकार हमारी प्रत्येक किया या 'कर्म' (action) के 'पीछे' हमारा मन, तन, बुद्धि, चित्त, पांच विकार तथा अन्तःकरण 'भागीदार' और **जिम्मेदार** हैं। इनके समूह को 'जीव' कहा जाता है तथा 'जीव' को ही 'सारे कर्मों' का परिणाम भोगना पड़ता है।

हमारे अन्दर **'आत्म ज्योति'** निर्मल है। यह सर्व गुण सम्पन्न है। परन्तु, जब इस 'ज्योति' के चारों ओर, 'अहम्' का आवरण (bulb) चढ़ जाता है! तब इस पर तुच्छ मायिकी विचारों की रंगत या मैल चढ़नी शुरू हो जाती है। इसी 'अहम् के बल्ब' को 'जीव' कहा जाता है, जिसमें 'ज्योति' का प्रकाश तो उसी तरह सम्पूर्ण होता है, परन्तु 'बल्ब' के मैले शीशे में से जो रोशनी बाहर की ओर प्रकाशित होती है, वह धीमी पड़ जाती है।

दूसरे शब्दों में, ज्यों – ज्यों तुच्छ रूचियों के ख्यालों से हमारा मन मैला होता

जाता है, त्यों – त्यों हमारे भ्रम – भुलाव का अन्धकार बढ़ता जाता है तथा इलाही प्रकाश व इलाही गुणों का प्रकटाव घटता जाता है।

इस प्रकार जीव के मैले मन में से तुच्छ रूचियां उत्पन्न होती हैं तथा हम 'कर्म – बद्ध' होकर 'पाप' करते रहते हैं, फलस्वरूप हम **'यम' के वश में हो कर अपने कर्मो की सजा भोगते हैं।**

All lower thoughts and actions, and resultant evils are the reflection and attributes of 'Maya' _ expressed and projected through our false egoistic conception of 'I', 'Me' and 'Mine'. In this way we submit ourselves to the 'Karmic Law' - 'As you sow, so shall you reap, and suffer the consequences of our depraved thoughts and deeds.

इसके विपरीत ज्यों – ज्यों हम पुनः अपने **इलाही केन्द्र 'आत्मा' की ओर 'रूख' करेंगें** तथा सत्संग में विचरण करते हुए उस 'ज्योति' के 'अस्तित्व' को याद करेंगे या सिमरन करेंगें, तब हमारे मन की 'मैल' उतरती जायेगी तथा मन पर अन्तर – आत्मा का अक्स या रोशनी या प्रकाश बढ़ता जाएगा तथा हमारे मन – तन में तुच्छ रूचियों की अपेक्षा, इलाही गुण प्रवेश करते जायेंगें । इस प्रकार मायिकी अज्ञानता का अन्धकार घटता जायेगा तथा हम माया रूपी 'यमों' से बचते रहेंगें।

In the degree our thoughts are again purified and spiritualised with the reflection of the Divine Light within ourselves - we become 'channel' for the outflow and expression of all noble virtues and attributes of Divine Bliss, Love and Grace of God; since all virtues and noble pursuits are the reflections of spirituality and have roots in Divinity.

वासना या संकल्प का मूल कारण हमारा मन है तथा यह तुच्छ रूचियों वाला 'मन' ही वास्तविक 'अपराधी' या दोषी (culprit) है, परन्तु शरीर को भी साथ ही दण्ड भोगना पड़ता है, क्योंकि 'मन' का 'साथी' बनकर, शरीर मन की वासना पूर्ति में 'हिस्सा' लेता है। तुच्छ रूचि वाले मन की संगत करने तथा हथियार के रूप में प्रयोग किये जाने के कारण, शरीर को भी कष्ट भोगने पड़ते हैं।

The real culprit or offender is the unseen mind, but the body has also to suffer the corporeal punishment - simply because the body was an abetter, accomplice and instruemnt of the depraved mind in the execution of the sin !

Even if we manage to evade the clutches of the 'Law of the Land' during our life - time, our ethereal body called 'Jiva', will nevertheless have to suffer the consequences of our evil thoughts and deeds, which are accurately & permanently recorded and stored in our consciousness - in obeisance of the Eternal all engulfing, perfect, unfailing 'Law of Karma' i.e. 'As you sow - so shall you reap.

यहाँ यह बात स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि **'यम' कोई शारीरिक 'हस्ती' नहीं है।** शारीरिक 'हस्ती' तो हमारे शारीरिक जीवन पर ही प्रभाव डाल सकती है। परन्तु **'यम'** तो हमारी मृत्यु उपरान्त भी हमारे कर्मों की **'पैरवी' तथा अन्तिम निपटारा** करता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि 'यम' सूक्ष्म 'तत्व' (ethereal element) है, जिससे हमारे 'जीव' (ethereal body) का सूक्ष्म देश (ethereal plane) में 'वास्ता' पड़ता है।

गुरबाणी में **'जीव' पर 'यम' के प्रभाव** को यूं ब्यान किया गया है –

मन मेरे भूले कपटु न कीजै।।
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ।। (पृ. ६५६)

जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ।।
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ।।
छड़ि खड़ोते रिवनै माहि जिन सिउ लगा हेतु।।
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु।।
जेहा बीजै सा लुणै करमा संदड़ा खेतु ।। (पृ. १३४)

मन कहा बिसारिओ राम नामु ।।
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ।। (पृ. ११८६)

कहु कबीर तब ही नर जागै।।
जम का डंडु मूंड महि लागै। (पृ. ८७०)

वास्तव में यह 'यम' त्रिगुणी मायिकी मंडल में गुप्त शक्ति' है, जो इलाही हुक्म अधीन 'जेहा बीजै सा लुणै 'करमा संदड़ा खेतु' के अटल कानून की पैरवी करती है–

इस अदृष्ट गुप्त सिलसिले में –

पुलिस
थाना
एफ. आई. आर. (F.I.R.)
गवाह
केस फाइल
अदालत
वकील
बहस
जज

आदि किसी शासकीय प्रबन्ध तथा 'कानूनी कार्यवाही' की आवश्यकता नहीं। यह समस्त कार्यवाही तथा पैरवी सहज स्वभाव, गुप्त रूप से सूक्ष्म मंडल में, स्वतः हो रही है।

गुरबाणी अनुसार, इस गुप्त शक्ति को ही 'यम' कहा गया है। यह केवल त्रिगुणी मायिकी मंडल में, इलाही हुकुम 'जो मैं कीआ सो मै पाइआ' के अटल कानून के अधीन प्रवृत है।

इस इलाही 'हुकुम' की पैरवी या फैसले में कभी भी कोई कमी, लापरवाही या गलती नहीं हो सकती क्योंकि यह सारा सिलसिला त्रुटि रहित **अकाल पुरूष का 'खेल अखाड़ा है' जो सच, नुक्सहीन, विघ्न–रहित तथा त्रुटि रहित है।** तथा इसमें इलाही गुप्त शक्तियां 'यमदूत' 'अजराइल फरिश्ता', 'धर्मराज' आदि ईश्वरीय हुकुम' के 'हथियार' ही हैं।

जिस प्रकार सुप्रीम कोर्ट के फैसले को देश का **'राष्ट्रपति'** ही क्षमा कर सकता है। उसी प्रकार गुरू, अवतार, महापुरूष भी इस गुप्त शक्ति या 'धर्म राज'

के फैसले को, अपनी कृपा दृष्टि अथवा 'नदर करम' द्वारा माफ कर सकते हैं तथा हमारे कर्मों के 'लेख' को फाड़ कर 'जीव' को 'मुक्त' कर सकते हैं। शर्त यह है कि जीव **सच्चे दिल से अपनी गलती का अहसास करके,** अन्तर – आत्मा में पश्चाताप् करे तथा सतिगुरू के समक्ष यूं प्रार्थना करे –

जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ।।
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ।। (पृ. १५६)

हा हा प्रभ राखि लेहु ।। (पृ. ६७५)

नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ।। (पृ. ७५७)

ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी।। (पृ ७९३)

अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ।। (पृ. ११०४)

त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ।। (पृ. १२६९)

असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ।।
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ।। (पृ १४१६)

In the astral plane, our ethereal bodies - called 'Jiva' are subject to invisible, all seeing, al engulfing and unfailing 'Karmic Law', and have to suffer the consequences of evil deeds of our depraved mind, through the Invisible Esoteric Corrective Power - called 'Jam' or Yam'.

Dispensation of wordly justice can be biased, faulty and inconsistent, but the 'Divine Dispensation of Justice' is accurate and perfect, for which No Judicial paraphernalia of : -

Police
case file
witness
prosecutor
lawyer
pleader

cross-examination
judge
court
jail

are required, as in the case of wordly judiciary. Of course, even in the Astral Plane, 'appeal for mercy can be made to the President of the Cosmos, i.e. God, through his Prophets for his magnanimous compassion and grace, to condone our sins.

The only condition for such Appeal is sincere inner repentance in our heart and soul, and complete and utter surrender of our 'Ego' at the feet of the Guru - with devotional prayers for pardoning our past sins, and solemn promise to abide by His Will in the future.

हम बाहर मुखी वृत्ति वाले 'जीव' हैं। इसलिए हमारी समझ, ज्ञान, निश्चय, भावनाएं त्रिगुणी स्थूल मायिकी दायरे तक ही सीमित हैं तथा अदृश्य गुप्त सूक्ष्म मंडल के विषय में हमारा ज्ञान तथा निश्चय सुना सुनाया, पढ़ा – पढ़ाया, नाम मात्र तथा भिन्न – भिन्न होता है।

युगों – युगों से महापुरूषों तथा गुरू जनों के उपदेश तथा बाणी के बावजूद, 'यम' तथा जीवन के अन्य अनेक 'पक्षों' के विषय में हमारे विचार तथा धारणाएं भिन्न – भिन्न अजीब तथा हास्यप्रद बनी हुई हैं, जो वास्तविकता से बहुत दूर तथा विपरीत हैं।

Our thinking and conceptions about various terms of religious dogmas and beliefs, such as - **SIN, YAM, HELL, HEAVEN, GOD, GURU, RELIGION** etc are hypothetic or imaginary and different, based on 'hearsay', and are far from or contradictory to the REALITY!

इसी प्रकार 'यम' के विषय में भी हम भ्रमित हैं तथा हमने कई डरावनी शक्ल

वाले मनोकल्पित 'राक्षस', दैत्य, देवी – देवता घड़ रखे हैं। दूसरी और हमारा निश्चय है कि ईश्वर की दरगाह में कोई दफ्तर होगा, जिसमें हमारे लेख (कर्म) लिखे जाते हैं तथा **अन्त** में मृत्यु उपरान्त अदालत में न्याय तथा फैसला होता है।

वास्तव में, सारा इलाही हुकुम का सिलसिला सूक्ष्म मंडल का ही **'खेल अखाड़ा'** है, जिसे दर्शाने का प्रत्यन नीचे किया गया है।

हमारी अन्तर – आत्मा में ही, **'हुकुम'** की सूक्ष्म शक्ति द्वारा अच्छे बुरे रव्यालों या कर्मो की 'रंगत' हमारे अन्तःकरण पर, प्रतिक्षण, पल – पल चढ़ती रहती है।

किसी बर्तन में स्वच्छ जल डालकर उसमें भांति – भांति की रंग – बिरंगी, मीठी, कड़वी – कसैली वस्तुओं के कण डालते जायें, तो उस पानी का **घोल** (solution) बनता जायेगा। प्रत्येक 'कण' मिलाने के साथ – साथ उसकी रंगत, बदबू, खुशबू, स्वाद आदि (composition) प्रतिक्षण बदलता जायेगा । यदि उस घोल को नये बर्तन में डाल दें, तो उस नए बर्तन में वही **पुराना 'घोल'** ही होगा, केवल बर्तन ही बदला हुआ होगा ।

ठीक इसी प्रकार हमारे मन के बर्तन में जो रव्याल या कर्मो का अक्स (reflection) पड़ता है उसके अनुसार ही हमारे मन की रंगत, खुशबू, बदबू, स्वाद आदि प्रतिक्षण बदलते रहते हैं तथा हमारे मन का 'घोल' (solution) गाढ़ा (dense) होता जाता है।

इस **'गाढ़े घोल'** में से निकली भड़ास, दुर्गन्ध, सुगन्धि या स्वाद ही हमारा चाल चलन, स्वभाव या **आचरण** (character) कहलाता है।

मन का **मिश्रित घोल** (compound Solution) ही हमारा अन्तःकरण (sub-consciousness) है, जिसके अनुसार हम **कर्म करते तथा परिणाम भोगते हैं।**

इसी अन्तःकरण की रंगत के अनुसार ही हमारे **'पुर्व – कर्म'** या **'भाग्य'** (fate or destiny) बनता है।

दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ।। (पृ. ४६१)

इन 'पूर्व कर्म' या 'पूर्व भाग्य' अनुसार ही इलाही कानून, 'जो मै कीआ सो मै पाइआ' के अधीन हमें दुख – सुख भोगने पड़ते हैं।

मृत्यु पश्चात हमें **'नया शरीर'** मिल जाता है, परन्तु हमारे अन्दर वही **'इलाही ज्योति'** तथा **'पुराना अन्तःकरण'** प्रवेश हो जाता हैं, जिसके द्वारा हम फिर वही पुराना 'उल्टा चरखा' चलाना शुरू कर देते हैं ।

अदृश्य 'आत्म मंडल' में इलाही 'हुकुम' अनुसार –

१. अन्तकरण (consciousness) ही **अदृश्य 'अदालत' है।**

२. अन्तःकरण के शीशे में से आत्मिक 'झलके' या **'ज़मीर की आवाज' ही 'अदृश्य पुलिस' है,** जो हमें तुच्छ कर्मो से रोकने के लिए **ताड़ना** करती है।

३. अन्तःकरण में से निकली **'भड़ास'** या **'दुर्गन्ध'** अनुसार ही हम अच्छे बुरे कर्म करते हैं।

४. हमारे कर्मो पर 'जो मै कीआ सो मै पाइआ' तथा 'जेहा बीजे सो लुणै करमा संदड़ा खेतु' का **इलाही कानून** लागु होता है।

५. इलाही **'हुकुम' की शक्ति ही धर्मराज के रूप में,** हमारे कर्मों की **'पैरवी'** करती है तथा **सजा** देती है ।

६. यह इलाही शक्ति ही **'यम'** के रूप में हमें दण्ड – भुगतान करवाती है।

७. यह इलाही शक्ति ही हमारी **'अपील' या प्रार्थना सुनती है।**

८. यह इलाही शक्ति ही गुर प्रसादि द्वारा हमें माफ करती है तथा हमारे कर्मों के लेख का **निर्णय करती है।**

९. यह इलाही शक्ति ही **नदर करम** द्वारा हमें **त्रिगुणों में से निकाल कर 'चौथे पद' में प्रवेश करवाती है।**

१०. यह इलाही शक्ति ही **'नाम दान'** की बख्शिश द्वारा हमें **गुरमुख जनों वाला जीवन** प्रदान करती है।

उपरोक्त विचारों से स्पष्ट है कि **'यम' 'अजराइल फरिश्ता', 'धर्मराज'** आदि **दृश्यमान अस्तित्व नहीं** है तथा न ही 'दरगाह', 'नरक – स्वर्ग' आदि कोई **स्थूल 'द्वीप' हैं।**

मात्र एक अकाल पुरूष की 'हुकमी रूपी' शक्ति ही सूक्ष्म रूप में, हमारी अन्तर – आत्मा में **भिन्न – भिन्न 'क्रियाऐं', 'चोज विडानी' कर रही** है तथा **इन क्रियाओं' अनुसार, इस 'इलाही शक्ति' को नाम दिये गये हैं।**

उदाहरणतया, **एक ही 'पातशाह'** का व्यक्तित्व जब –

१. राज सिंहासन पर बैठता है, तो **'जॅज'** होता है।

२. युद्ध करता है, तो **'सेनापति'** (General) होता है।

३. पत्नी के साथ व्यवहार करता है, तो **'पति'** कहलाता है।

४. बच्चे के साथ लाड करता है, तो **'पिता'** बन जाता है।

आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ।।
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ।। (पृ. ७२६)

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ।।
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ।।
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ।।
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ।।
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ।।
आपे बहु बिधि रंगला सखीए मेरा लाल ।।
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ।।
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ।।
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ।। (पृ. २३)

कतहूं सुचेत हुइकै चेतना को चार कीओ
कतहूं अचिंत हुइकै सोवत अचेत हो ।।
कतहूं भिखवारी हुइकै मांगत फिरत भीख
कहूं महां दान हुइ कै मांगिओ धन देत हो ।।
कहूं महाराजन को दीजत अंनत दान ।।
कहूं महाराजन ते छीन छित लेत हो ।।
कहूं बेद रीत कहुं ता सिऊ बिप्रीत
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सरगुन समेत हो ।। (अकाल उस्तति पा. १०)

(क्रमशः)